The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 12 | December 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

अमीर खुसरो द्वारा वर्णित भारत - एक ऐतिहासिक अवलोकन

डॉ0 समन ज़हरा जैदी

असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, गाँधी फैज़-ए-आम कॉलेज, शाहजहाँपुर

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.18266267

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 30-12-2025

Published: 10-01-2026

Keywords:

सांस्कृतिक समन्वय, भाषा और साहित्य, भारतीय संस्कृति, विभिन्नताओं में एकता, गंगा-जमुनी संस्कृति, सामाजिक इतिहासकार।

ABSTRACT

अमीर खुसरो मध्यकालीन भारतीय इतिहास के एक बहुआयामी व्यक्तित्व हैं। वह तेरहवीं सदी के प्रसिद्ध कवि, साहित्यकार, सूफी, संगीतज्ञ, दार्शनिक एवं इतिहासकार थे। उनकी रचनाऐ समकालीन राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास को जानने के महत्वपूर्ण साधन हैं। उन्होंने दिल्ली के विभिन्न सुल्तानों का दौर अपनी आँखों से देखा था। उनके व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण पहलू उनका भारत प्रेम था तथा यही कारण है की उनकी रचनाऐं भारतीयता से ओत-प्रोत हैं। वह भारत को पृथ्वी का स्वर्ग मानते हैं। यद्यपि उनकी सभी रचनाओं में ऐसे बयान मिलते हैं जो भारत के बारे में उनकी दृष्टि और भावना को समझने में मदद देते हैं किंतु फिर भी देशप्रेम सम्बन्धी बयानों के सिलसिले में नूह सिपेहर इन सबमें सबसे अधिक सम्पन्न प्रतीत होता है, जिसमें वह भारतीय आबो हवा, ऋतुओं, सांस्कृतिक जीवन एवं प्राकृतिक सौदर्य का बड़ा सुन्दर वर्णन करते हैं। उनकी रचनाओं में इतिहास, भारतीयता, संस्कृति एवं साहित्य का अनोखा संगम दिखाई देता है। साथ ही भारतीय गंगा-जमुनी संस्कृति की झलक भी है। उनके लेखन में देशभक्ति के साथ ही हिन्दू-मुस्लिम समन्वय एवं सम्मान का भाव भी है, उनका राष्ट्रीय चिंतन हमारे लिए एक आदर्श है, जोकि न केवल उनकी रचनाओं बल्कि उनके व्यक्तित्व में भी दिखता है।

दिल्ली के हज़रत अमीर खुसरो मध्यकालीन भारत के एक बहुआयामी व्यक्तित्व हैं। इन जैसा प्रतिभाशाली व्यक्तित्व हमें दोबारा भारतीय इतिहास में नहीं दिखता। इन्होंने दिल्ली के विभिन्न सुल्तानों

का दौर अपनी आँखों से देखा था। इन सुल्तानों की छत्र-छाया में रहते हुए इन्होंने गद्य एवं पद्य में विभिन्न कृतियों की रचना की जोकि समकालीन राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास को जानने के महत्वपूर्ण साधन हैं। इसके साथ ही अमीर खुसरो तेरहवीं सदी के प्रसिद्ध कवि, दार्शनिक, सूफी संत एवं संगीतज्ञ थे, उनके व्यक्तित्व की एक विशेष बात उनका भारत प्रेम था। भारतीयता उनके रोम-रोम में बसी थी। नूह सिपेहर के तीसरे भाग में वह भारत की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं। वह लिखतें है कि- रक़ीब अगर ताना देता है कि मैं दूसरे मुल्कों पर हिन्द को क्यों तरजीह देता हूँ तो इसका कारण है कि- "हस्त मरा मौलिद-औ मावा-औ वतन" (यही मेरा जन्म स्थान और यही मेरी मातृभूमि है)। अपनी मातृभूमि की प्रशंसा और उसे देने वाले महत्व को वह ह0 मुहम्मद (स0) का एक मशहूर कथन सामने रखकर उचित ठहराते हैं- "हुब्बुल-वतन मिन अल ईमान" (मातृभूमि से प्रेम सच्चे दीन का एक बुनियादी अंग है)। उनका दावा है कि यह उनके दीन का एक आधार तत्व है।[1]

भारत विभिन्नताओं में एकता का देश है, इस बात को भी उन्होंने बखूबी समझा। उनकी रचनाओं में ऐसे बयान मिलते हैं जो भारत के बारे में उनकी दृष्टि और धारणा को समझने में मदद् देते हैं। वह लिखते हैं कि उस काल में प्रत्येक प्रान्त की अपनी एक भाषा थी जैसे सिंधी, लाहौरी (पंजाबी), कशमीरी, तिलंगी (तेलगू), गूजर (गुजराती), मआवरी (मलयालम), धोर समुंदरी (कन्नड़), हिंदवी जो अवध और दिल्ली के आस-पास बोली जाती थी, यह हिन्दुस्तान की वे भाषाएँ हैं जो प्राचीनकाल से जीवन के सामान्य उद्देश्यों की अभिव्यक्ति हेतु सभी प्रकार से प्रयुक्त होती रही है। संस्कृत भाषा केवल ब्राह्मणों तक सीमित थी किन्तु सामान्यतः ब्राह्मण स्त्रियाँ संस्कृत का ज्ञान नहीं रखती थीं। वह लिखते हैं कि अरबी की तरह संस्कृत का अपना व्याकरण, रूप, तकनीके तथा क़ायदे हैं, इस भाषा में मोतियों में मोती होने का गुण मौजूद है यह अरबी से घटिया है पर फ़ारसी से श्रेष्ठतर है।[2]

खुसरो ने भारत को पृथ्वी का स्वर्ग माना है-

"किश्वरे हिन्द अस्त बहिश्ते व ज़मी।

हुज्जतश ईनक ब रूखे सुफ़ह बे बीं।।"

अर्थात भारत इस ज़मीन पर स्वर्ग है। इसे इसके धरातल पर देखो। वह नूह सिपेहर में लिखते हैं कि- "जहाँ आदम और हव्वा पैदा हुए, जहाँ मोर है, मोर स्वर्ग में भी है, यहाँ सर्प है, चूंकि सर्प अच्छाई को डस लेता है तो ईश्वर ने कहा तुम ज़मीन के अन्दर चले जाओ, यहाँ कि प्रकृति बड़ी मनोरम है, यह मुल्क हिन्दोस्तान है जोकि मेरी मातृभूमि है। वह भारत में शून्य के अविष्कार के बारे में लिखते हैं कि अक़्ल अगर पूरी दुनिया का चक्कर भी काट आए तब भी अंकगणित जैसी दौलत कहीं नहीं पायेगीए

शून्य जोकि स्वयं में एक खाली निशान है पर जब किसी और के साथ प्रयुक्त होता है तो बामानी बन जाता है, शून्य के अलावा वह शतरंज के खेल का भी ज़िक्र करते हैं और उसे दुनिया के लिए हिन्द का एक अनोखा तोहफ़ा बताते हैं।"[3] यद्यपि अमीर खुसरो ने अनेक ग्रन्थों की रचना गद्य एवं पद्य में की है। बरनी के अनुसार उन्होंने गद्य एवं पद्य दोनों में एक पुस्तकालय ही लिख डाला था।[4]

ऐतिहासिक दृष्टि से उनके ग्रंथों को दो भागों में विभाजित कर सकते हैं एक भाग साहित्यिक रचनाएं तथा दूसरा भाग ऐतिहासिक रचनाओं का है। उनकी ऐतिहासिक रचनाओं के अन्तर्गत पाँच मसनवी-किरानुस्सादैन, मिफ़ताउल फुतूह, आशिक़ा, नूह सिपेहर, तुग़लकनामा तथा गद्य में लिखित खज़ाइनुलफुतूह है। फारसी भाषा में किसी विषय विशेष या व्यक्ति विशेष पर लिखा गया काव्यात्मक विवरण मसनवी कहलाती है। खुसरो द्वारा लिखित इन मसनवी से ऐतिहासिक महत्व की जानकारी प्राप्त होती है। इसलिए इन्हें ऐतिहासिक मसनवी कहा जा सकता है।

अमीर खुसरो की प्रथम ऐतिहासिक रचना किरान-उस-सादैन है। इसमें दिल्ली के सुल्तान कैकूबाद तथा उसके पिता बुग़रा खाँ के मिलन का वर्णन है। कैकूबाद ने स्वयं उससे इस विषय पर कविता लिखने का आग्रह किया था। खुसरो ने कड़ी मेहनत करके एक ऐसी रचना का सृजन किया जोकि कला व साहित्य की हर कसौटी पर खरी उतरती है तथा इसमे सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास की भी जानकारी मिलती है। इस रचना में शब्दों का प्रयोग तथा बयान करने का अन्दाज निराला है मो० वाहिद मिर्ज़ा इसे अमीर खुसरो की सुन्दरतम रचनाओं में से एक कहते हैं।[5]

मसनवी अल्लाह की प्रशंसा से प्रारम्भ होती है। फिर नात (ह० मुहम्मद स० की प्रशंसा) तत्पश्चात कैकूबाद की प्रशंसा की गई है। कैकूबाद एवं बुग़रा खाँ के मिलन का मार्मिक वर्णन करते हुए लिखा है कि वह एक दूसरे से गले मिलकर खूब रोए। तत्पश्चात कैकूबाद को तख्त पर बिठाया गया तथा दरबारी परम्परा के अनुसार वह स्वयं उसके सामने हाथ बाँधे खड़ा रहा, उसके बाद दोनों की एकांत में भेंट हुई और गिले-शिकवे दूर हुए। उसके बाद कैकूबाद के द्वारा भव्य भोज का आयोजन किया गयाए जिसमें नाच-गाना भी हुआ। इस सामान्य घटना को अमीर खुसरो की किरान-उस-सादैन ने अमर बना दिया। इस रचना में इस घटना को बड़ी सुन्दरता से ऐतिहासिक तथ्यों के साथ सृजित किया गया है। पिता-पुत्र के मिलन के अतिरिक्त इसमें राजधानी दिल्ली का भी विस्तृत वर्णन है। दिल्ली की विशेषताएं बताते हुए वह लिखता है कि यहाँ बड़े-बड़े सूफ़ी सन्त थे। यह नगर पहाड़ी पर स्थित था जिसके चारों ओर बाग़ थे। यहाँ हर ऋतु में फूल खिलते हैं तथा बाज़ार देशी-विदेशी मेवों से भरे रहते हैं, सामान्यता नगरवासी साहित्य तथा संगीत में रूचि रखते हैं तथा सैन्यकला में भी निपुण हैं।[6]

मिफ़ता-उल-फुतूह (विजयों की कुंजी) अमीर खुसरो की दूसरी ऐतिहासिक मसनवी है, जिसमें सुल्तान जलालुद्दीन फिरोज़ खिलजी के शासनकाल के प्रारम्भिक वर्षों का विस्तार से वर्णन किया गया है। वह लिखता है कि- "हे सुल्तान फिरोज़ तेरा स्वागत है तुमने एक वर्ष में 4 विजयें प्राप्त की, प्रथम विजय में एक विद्रोही के सिर को मिट्टी में लुढ़काया, दूसरी विजय में दूसरे विद्रोही के सिर में भाला मारकर अपने भाले को रक्त से गीला किया। तीसरी विजय में उसने हिन्दुस्तान को अपने दुश्मन के अन्धकार से मुक्त कर दिया। चौथी विजय में वह तूफ़ान की भांति झाइन पर झपटा, परन्तु सुल्तान जैसे वीर के लिए चार विजय क्या बात हैं, उसने अन्य हज़ारों विजयें प्राप्त की हैं। अल्लाह उसके शासन को विस्तृत करे तथा वह विजय भोगता रहे।"[7] किंतु अमीर खुसरो के लेखन का यह बड़ा दोष था कि वह दरबारी इतिहासकार थे। सुल्तानों की छत्र-छाया में रहते हुए उन्होंने उन्हीं विवरणों को सम्मिलित किया, जिसमें सुल्तान प्रसन्न हो सकें। उसमें इतना साहस नहीं था कि वह अलाउद्दीन द्वारा जलालुद्दीन खिलजी की हत्या का उल्लेख कर सके, लेकिन फिर भी इसमें ऐतिहासिक महत्व की अनेक जानकारी मिलती हैं।

अमीर खुसरो की तीसरी ऐतिहासिक कृति आशिक़ा है जिसमें अलाउद्दीन खिलजी के बड़े पुत्र खिज्र खाँ तथा गुजरात के राजा कर्ण बघेला की पुत्री देवलरानी की प्रेमकथा तथा विवाह का वर्णन है। इस कृति में तत्कालीन राजनीतिक घटनाओं के साथ ही खिज्र खाँ एवं देवलरानी के विवाह के अवसर पर होने वाले क्रिया-कलापों के माध्यम से सामाजिक एवं सांस्कृतिक महत्व की जानकारी मिलती है। सय्यद अतर अब्बास रिज़वी लिखते हैं कि- "अमीर खुसरो ने उस समय की वैवाहिक रीति-रिवाजों का बड़े विस्तार से उल्लेख किया है जैसे नगर की स्वच्छता, सजावट, विभिन्न प्रकार के बाजेए खेल-तमाशें, नाच-गाने, बारात के जुलूस, निकाह, विदाई के समय होने वाली रस्में आदि उस समय के उच्च वर्ग की सामाजिक दशा की जानकारी प्राप्त करने लिए इस रचना का विशेष महत्व है। इस ग्रन्थ में खिज्र खाँ के अन्तिम समय उसे अन्धा बनाये जाने एवं हत्या का उल्लेख भी बहुत ही करूण शैली में है।[8]

अमीर खुसरो की ऐतिहासिक मसनवियों में नूह सिपेहर एक महत्वपूर्ण रचना है जिसे उसने सुल्तान मुबारक खिलजी के आदेशानुसार 1318-19 ई0 में पूरा किया। यह रचना नौ अध्यायों में विभाजित है, जो नौ आकाशों यानि स्वर्ग के नौ क्षेत्रों (सिपिहर) की संगत हैं। अमीर खुसरो द्वारा वर्णित भारत एवं उसकी देशभक्ति सम्बन्धी भावनाओं को समझने में उसकी यह रचना बहुत अधिक महत्वपूर्ण है। यद्यपि उनकी सभी रचनाओं में ऐसे बयान मिलते हैं जो भारत के बारे में उनकी दृष्टि और भावना को समझने में मदद् देते हैं किंतु फिर भी देशप्रेम सम्बन्धी बयानों के सिलसिले में नूह सिपिहर इन सब में सबसे अधिक सम्पन्न प्रतीत होती है।

प्रथम सिपेहर से पुस्तक आरम्भ होती है। सर्वप्रथम ईश्वर, पैगम्बर तथा उसके आध्यात्मिक गुरु निज़ामुद्दीन औलिया की प्रशंसा की गई है। तत्पश्चात् सुल्तान मुबारक खिलजी के राज्यभिषेक और उसकी देवगिरि विजय का उल्लेख किया गया है। दूसरे सिपेहर के अन्तर्गत सुल्तान द्वारा निर्मित कुछ भवनों का उल्लेख है। तत्पश्चात् वारंगल विजय का वर्णन है। वह यह कहते हुए इस सिपेहर की समाप्ति करता है कि देहली के समान कोई नगर नहीं है। खिता, खुरासान, गिनिज, तबरेज़, बुखारा, ख्वारिज़्म कोई भी देहली का मुक़ाबला नहीं कर सकते।[9]

भारत की आबो-हवा की तारीफ़ करते हुए खुसरो कहते हैं कि वह इतना सन्तुलित है कि एक गरीब किसान बस एक पुरानी चादर ओढ़कर अपने मवेशी चराते हुए चारागाह में ही अपनी रातें गुज़ार देता है, एक ब्राह्मण प्रातः नदी के ठंडे पानी में स्नान कर सकता है, जबकि पेड़ की बस एक शाख इस देश के ग़रीबों को छॉव देने के लिए काफ़ी है। हिन्द में साल भर बहार बनी रहती है और इसलिए यहाँ भरपूर हरियाली रहती है तथा सुन्दर खुशबूदार फूल खिलते हैं, जिनमें मुरझा जाने के बाद भी खुशबू रहती है। वह अपने लेखन में भारतीय फ़लों आम (नग़ज़क), केलों (मूजी) जो बेहद नर्म होता है और नबाती बमरी (गन्ना) के नामों का उल्लेख करते हैं। वह इलाएची (लाची), कपूर और लौंग (करनफ़ल) का वर्णन हिन्द के खुश्क फ़लों के रूप में करते हैं। उन्होंने पान (ताम्बूल) के विषय में लिखा है कि, यह एक ऐसा पत्ता है जिसे फल की तरह खाया जाता है और दुनिया में कहीं भी उसके जैसी कोई चीज़ नहीं है लेकिन केवल खास लोग ही उसका शौक़ आज़माते है।[10]

खुसरो लिखते हैं कि भारत एक ऐसा देश है, जहाँ दुनियाभर के विद्वान लोग शिक्षा प्राप्त करने आते हैं लेकिन भारत का कोई भी विद्वान शिक्षा ग्रहण करने के लिए बाहर नहीं जाता क्योंकि इसकी कोई ज़रूरत नहीं है। ब्राह्मण अपनी विद्वता में अरस्तु की तमाम किताबों से कई दर्जा ऊपर हैं। यूनान वालों ने दर्शन में दुनिया को जो कुछ दिया है हिन्द के ब्राह्मणों के पास उससे कहीं अधिक ज्ञान है। ब्राह्मण ज़्यादा नहीं बोलते जिसके कारण उनका ज्ञान दुनिया से छुपा हुआ है। मैंने उनके ज्ञान के भेंदों से कुछ जानने की कोशिश की है।[11]

अमीर खुसरो ने अपनी रचनाओं में भारत की प्रत्येक वस्तु और प्राकृतिक सौन्दर्य को मोती की तरह पिरो दिया है। वह हिन्द की नारी की सुन्दरता का वर्णन भी करते हैं। वह हिन्द के तोते (तूती), कव्वे, कठफ़ोड़वा, बगुला, मोर, बन्दर तथा हाथी के बारे में लिखते हैं कि यह अपनी बुद्धि के कारण दुनिया भर में अनोखे हैं। वह देशप्रेम में इतना लीन हो जाते हैं कि लिखते हैं कि- "मुझको मय दो पर किसी और मुल्क की नहीं। मुझे शराब दो तो इसी मुल्क की।"[12]

अमीर खुसरो की आलोचना करने वाले विद्वान लिखते हैं कि उन्होंने अपने संरक्षक सुल्तानों को प्रसन्न करने के लिए साहित्यिक रचनाएं लिखीं किंतु वह एक ऐसे बहुमुखी-प्रतिभा के धनी विद्वान थे जिन्हें एक ओर शासकों और सामंतों में प्रतिष्ठा प्राप्त थी तो दूसरी ओर वह जनसाधारण में भी लोकप्रिय थे। यदि उन्होंने शासकों का दिल जीतने के लिए रचनाएं रचीं तो दूसरी ओर जनसाधारण के विषय में भी लिखा। उनकी रचनाओं में भारत के प्राकृतिक सौन्दर्य, रीति-रिवाज़, यहाँ के फल, फूल, फ़सले, पशु तथा सांस्कृतिक महत्व की अनेकों जानकारियाँ मिलती हैं। इसलिए आधुनिक इतिहासकार के.एम. अशरफ ने उन्हें समकालीन सामाजिक जीवन का प्रसिद्ध इतिहासकार माना है।[13] उनकी रचनाओं की एक विशेषता यह है कि वह देशप्रेम की भावना से ओत-प्रोत हैं, यद्यपि उस समय भारत की एक राष्ट्र के तौर पर पहचान नहीं थी किंतु उनकी रचनाओं तथा विचारों में वृहद भारत का एक पूर्ण दृश्य दिखाई देता है।

अमीर खुसरो की अन्तिम मसनवी तुग़लकनामा है जो उनकी अन्तिम रचना भी मानी जाती है, इसकी रचना सुल्तान ग़यासुद्दीन तुग़लक की आज्ञानुसार की गयी थी इसमें खिलजी वंश के पतन तथा तुग़लक वंश की स्थापना के मध्य मात्र दो महीने की घटनाओं का वर्णन किया गया है। मुबारक खिलजी की हत्या, ग़यासुद्दीन तुग़लक के सिंहासनारोहण की वास्तविक तिथियां इसमे मिल जाती हैं। खुमरो खाँ एवं गाजी मलिक (ग़यासुद्दीन तुग़लक) के बीच हुए युद्ध के विषय में भी बहुत सी जानकारी मिलती हैं। बरनी अथवा ईसामी जैसे अपने समकालीन इतिहास लेखकों की तुलना में खुसरो ने तुग़लकनामा में अधिक विस्तृत प्रमाणिक एवं सजीव वर्णन किया है। पद्य में लिखे जाने के बाद भी इस ग्रन्थ का महत्व अन्य किसी भी गद्य में लिखे गये इतिहास से कम नहीं है। किन्तु इस रचना में भी अपने आश्रयदाता सुल्तान ग़यासुद्दीन तुग़लक को प्रसन्न करने के लिए खुसरो ने हर सम्भव प्रयास किया है।

खज़ाइनुल फुतूह अमीर खुसरो द्वारा गद्य में लिखित एकमात्र ऐतिहासिक कृति है, यद्यपि अमीर खुसरो एक शायर थे और पद्य में लिखना उनके लिए सरल कार्य था लेकिन अलाउद्दीन खिलजी के दरबार में सरकारी इतिहासकार का पद कबीरूद्दीन के पास था जिसने कई ऐतिहासिक ग्रन्थों की रचना की थी, अतः खुसरो ने कबीरूद्दीन से प्रेरित होकर गद्य में खज़ाइनुल फुतूह की रचना की।[14] जोकि 1311 में समाप्त हुई। इसमें 1295 से लेकर 1311 ई0 तक की घटनाओं का उल्लेख है। खुसरो अपनी इस रचना के माध्यम से अलाउद्दीन का खास विश्वासपात्र बनना चाहता था ताकि उसका नाम भी कबीरूद्दीन जैसे इतिहासकारों में सम्मिलित किया जा सके। इस कृति में अलाद्दीन के सिंहासनारोहण, सार्वजनिक कार्य, प्रथम देवगिरि अभियान, आर्थिक एवं सामाजिक सुधार, संगीत, आक्रमण, विभिन्न विजयों, दक्षिण भारत की विजय एवं सुल्तान द्वारा कराये गये निर्माण कार्यों का विवरण है। इस कृति के विषय में के.एस.

लाल का कथन है कि- "इसके ऐतिहासिक महत्व से इन्कार नहीं किया जा सकता, क्योंकि वास्तविक दृष्टि से अलाउद्दीन के शासनकाल का केवल यही समकालीन इतिहास है।"[15] अपनी अन्य कृतियों की तरह ही इस में भी खुसरो उन्हीं विवरणों को सम्मिलित करते हैं जिससे सुल्तान प्रसन्न हो सकें। खुसरो के लेखन का यही सबसे बड़ा दोष है। इसमें वह अलाउद्दीन द्वारा जलालुद्दीन खिलजी की हत्या के विषय में भी मौन हैं, क्योंकि अन्य सरकारी इतिहासकारों की तरह उनमे इतना साहस नहीं था कि वह अपने संरक्षक सुल्तान के विरोध में कुछ भी लिख सकें। किंतु मुहम्मद हबीब लिखते हैं कि वह घटनाओं को छोड़ अवश्य देता है जिसकी पूर्ति अन्य ऐतिहासिक ग्रन्थों से हो जाती है, किंतु वह इतना ईमानदार है कि कभी झूठ नहीं लिखता। हम उसके कथनों पर विश्वास कर सकते हैं।[16]

अपनी इस रचना के माध्यम से खुसरो एक शायर की जगह एक इतिहासकार के रूप में पहचाने गये, उन्होंने दूसरे लेखकों द्वारा वर्णित घटनाओं का संक्षिप्त विवरण देने के साथ ही सुदूर दक्षिण अभियानों का विस्तृत वर्णन भी किया है। इस पुस्तक में उसने तिथियों का भी क्रम से उल्लेख किया है, जिसमें तत्कालीन घटनाओं को समझने में आसानी हो जाती है। बदायूँनी के अनुसार खुसरो स्वयं दक्षिण विजय में गया था यही कारण है कि वह इन अभियानों के समय, स्थान के नाम, सैन्य गतिविधियों, विभिन्न तिथियों, विजय, लूट के समय सम्पत्तियों का विवरण आदि का विस्तृत रूप से उल्लेख करते हैं।[17]

अमीर खुसरो के इतिहास लेखन के विषय में विद्वानों की अलग-अलग राय हैं, जिसमें आधुनिक पश्चिमी विद्वान पी. हार्डी ने अपने ग्रन्थ 'हिस्टोरियन्स ऑफ मेडिवल इण्डिया' में अमीर खुसरो की इतिहास के प्रति दृष्टिकोण की गंभीर विवेचना की है, उन्होंने खुसरो की तीन रचनाओं- किरान-उस-सादैन, खज़ाइनुल फुतूह तथा तुग़लकनामा के अध्ययन के आधार पर लिखा है कि उसने भूतकाल का अध्ययन समझने एवं शिक्षा देने के लिए नहीं करके अपने आश्रयदाता सुल्तानों को प्रसन्न करने के लिए किया जिससे उसकी आजीविका चलती रहे, उसने अतीत को धूमधाम प्रदर्शनों एवं समारोहों के रूप में प्रदर्शित किया है। वह आलोचनात्मक पद्धति या साक्ष्य के चयन का प्रयत्न नहीं करता इन्हीं सब कारणों के आधार पर पी. हार्डी का मत है कि खुसरो ने इतिहास लेखन नहीं किया बल्कि काव्य रचना की है अतः वह केवल कवि थे इतिहासकार नहीं।[18] लेकिन कुछ भारतीय इतिहासकारों सय्यद हसन अस्करी, के.एम. अशरफ, सय्यद अतहर अब्बास रिज़वी आदि उन्हें इतिहासकार की श्रेणी में रखते हैं। सय्यद हसन अस्करी लिखते हैं कि "वे ज्ञान और बुद्धि के क्षेत्र के व्यक्ति थे उनमें इतनी क्षमता थी कि वे आलोचनात्मक और कालक्रमबद्ध तरीके से ऐतिहासिक विजयों की विवेचना एवं तर्कपूर्ण विश्लेषण करते लेकिन खुसरो के लिए इतिहास का अर्थ तत्कालीन इतिहास था वह साहित्यिक उपलब्धियां का मोह

नहीं छोड़ सके उन्होंने कहीं भी इतिहासकार होने का दावा नहीं किया। वह स्पष्ट लिखते हैं कि महत्वपूर्ण ऐतिहासिक विषयों पर उन्होंने अपनी कृतियों की रचना या शासकों के सुझाव पर की या उनको भेंट देने के लिए। इसके लिए उनको अपने अन्तःकरण से प्रेरणा नहीं मिलती थी।"[19]

कुछ इतिहासकारों का मानना है कि खुसरो अलंकृत भाषा का प्रयोग करते हैं और महत्वूर्ण ऐतिहासिक तथ्य छोड़ देते हैं लेकिन सय्यद हसन अस्करी का मानना है कि उनके अलंकृत चित्र में से ही जो तथ्य सामने आते हैं वह शुद्ध इतिहास से सम्बन्धित हैं कभी-कभी वह ऐसे तथ्य देते हैं जो अन्य किसी इतिहासकार ने नहीं दिये हैं। यद्यपि हम उनको इतिहासकार के रूप में क्षमा नहीं कर सकते किंतु उनकी कठिनाइयों और सीमाओं पर विचार करते हुए, हम उन पर यह दोष नहीं लगा सकते कि उन्होंने जानबूझकर तथ्यों को तोड़ा-मरोड़ा। उनके पास एक निष्पक्ष मस्तिष्क था।[20]

अमीर खसुरो की ऐतिहासिक कृतियों के अपने गुण-दोष हैं हमें उनकी आलोचना एवं प्रशंसा करते समय एक संतुलन बनाये रखना चाहिए तथा हमारा नज़रिया अनावश्यक रूप से आलोचनात्मक नहीं होना चाहिए। वर्तमान के मानदंड पर अतीत को परखना उचित नहीं होगा। उनकी रचनाओं में समसामयिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन का भरपूर चित्रण किया गया है। अधिकतर आधुनिक भारतीय इतिहासकारों ने उन्हें एक सामाजिक इतिहासकार की संज्ञा प्रदान की है। उनकी कृतियों का बड़ा ऐतिहासिक महत्व है। उनकी रचनाओं की एक विशेषता यह है कि उसमें भारतीय गंगा-जमुनी संस्कृति की झलक है। उनके लेखन में देशभक्ति के साथ ही हिन्दू-मुस्लिम समन्वय एवं सम्मान का भाव भी हैं उनका राष्ट्रीय चिंतन हमारे लिए एक आदर्श है जोकि न केवल उनकी रचनाओं बल्कि उनकी जीवन शैली में भी दिखता है।

सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची:

- अमीर खुसरो-नूह सिपिह्र, सं. मोहम्मद वाहिद मिर्ज़ा, कलकत्ता-1950, पृ0-150
- वही, पृ0-180-81
- वही, पृ0-170
- बरनी-तारीख-ए-फिरोज़शाही, पृ0-359
- मोहम्मद वाहिद मिर्ज़ा-द लाइफ एण्ड वर्क्स ऑफ अमीर खुसरो, दिल्ली-1974, पृ0-176
- अमीर खुसरो-किरान-उस-सादैन, मतबा हसनी, लखनऊ-1261, पृ0-24
- अमीर खुसरो-मिफ़ताउल फुतूह, सं0 शेख अब्दुर्रशीद, अलीगढ़-1954, पृ0-1-6
- सय्यद अतहर अब्बास रिज़वी- खिलजी कालीन भारत, अलीगढ़-1955, पृ0-6

- अमीर खुसरो-नूह सिपेहर, सं0 मोहम्मद वाहिद मिर्ज़ा, कलकत्ता-1950, पृ0.76-147
- वही, पृ0-160
- वही, पृ0-163
- वही, पृ0-210
- के.एम. अशरफ-लाइफ़ एण्ड कंडीशन्स इन मिडिवल इंडिया, दिल्ली-1970, पृ0-15
- मोहम्मद हबीब-हज़रत अमीर खुसरो ऑफ देहली, पृ0-346-47
- के.एस. लाल-हिस्ट्री ऑफ द खलजीज़, इलाहाबाद-1950, पृ0-393
- मोहम्मद हबीब-हज़रत अमीर खुसरो ऑफ देहली, पृ0-352
- अब्दुल क़ादिर बदायूँनी-मुनतखब-उत-तवारीख, भाग-1, कलकत्ता-1868, पृ0-197
- पी.हार्डी-हिस्टोरियन्स ऑफ मेडिवल इंडिया, अध्याय-5, पृ0-87-93
- सैय्यद हसन अस्करी-अमीर खुसरो, इतिहासकार के रूप में (इतिहास भा0 इतिहास अनुसंधान परिषद की शोधपत्रिका) अंक-2, जनवरी-दिसम्बर-1993, पृ0-102-02
- मोहिब्बुत हसन सं0. हिस्टोरियन्स ऑफ मेडिवल इण्डिया, मेरठ-1968, पृ0-26-27